© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

चित्रकूट परिक्षेत्र की मूर्तिकला में कार्तिकेय की प्रतिमाओं का विश्लेषण

गुंजन बैस
प्राचीन इतिहास संस्कृति
एवं पुरातत्व विभाग
डॉ0 राम मनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

प्रस्तावना

कार्तिकेय विश्व परिवार के प्रधान देव माने गये हैं। तारक राक्षस को मारने के लिए इनका जन्म हुआ है। इनके जन्म से सम्बन्धित अनेक कथाओं का उल्लेख गोपीनाथ राव[1] ने किया है। कार्तिकेय को स्कन्द, कुमार, महासेन आदि नामों से भी अभिहित किया गया है। वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार देवसेना का पति, अग्नि का पुत्र और गंगा का पुत्र विराट प्राण या जीवन तथ्व का प्रतीक है, और इसी की संज्ञा स्कन्द है।[2] अतः यह कहा जा सकता है कि कार्तिकेय के अंतर्गत कई देवताओं का समावेश था। स्कन् द शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में हुआ है। भाष्यकार ने अचार्यों के प्रसंग में शिव, स्कन्द और विशाल का उल्लेख किया है।[3]

पुराणों में कार्तिकेय की शक्ति विषयक अनेक कथाएं प्राप्त होती हैं।[4] शिवपुराण में कार्तिकेय को कुशल योद्धा और युद्ध विशारद के रूप में वर्णित किया गया है।[5] हिन्दू पंच देवों में कार्तिकेय की गणना नहीं होती है और न ही वे गणेश इत्यादि अन्य देवताओं के सदृश कार्तिकेय किसी विशिष्ट सम्प्रदाय के सर्वोच्च देवता के रूप में भी पूजित नहीं हुए, फिर भी सम्पूर्ण भारत (उत्तर, दक्षिण) में एक युद्ध प्रिय देवता के रूप में लोकप्रिय रहे। दक्षिण भारत में इन्हें सुब्रह्मण्य के नाम से जाना जाता है।

उत्तर भारत के युद्ध प्रिय शासकों ने अपनी मुद्राओं में कार्तिकेय का अंकन बड़े गौरव के साथ किया है। कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर स्कन्द, कुमार, विशाल और महासेन आदि रूपों का उल्लेख हुआ है। यौधेयों ने उन्हें विशेष रूप से अपने सिक्कों पर अपनाया था, जहां उन्हें षष्ठमुख रूप में शक्ति लिए प्रदर्शित किया गया है।[6] उत्तर भारत के कतिपय जनपदीय

शासकों द्वारा चलाए गये कुछ सिक्कों पर कुक्कुट, स्तम्भ और मुर्गे के साथ ताड़ वृक्ष के दर्शन होते हैं। डॉ0 जे0एन0 बनर्जी ने इन्हें स्कन्दोपासना का प्रतीक बताया है।[7] गुप्तकाल में सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के सिक्कों पर स्कन्द और उनके वाहन मयूर का अंकन हुआ है।[8] एटा जिले से प्राप्त बिलसड़ अभिलेख में कार्तिकेय के सम्मान में मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है।[9] भीटा और बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों पर 'स्कन्दशूरस्य' शब्द उत्कीर्ण है।[10]

प्रतिमा लक्षण ग्रन्थों में कार्तिकेय को विभिन्न प्रकार से प्रदर्शित करने का विधान मिलता है। वराहमिहिर की वृहत्संहिता[11] में कार्तिकेय को मयूर पर आसीन, हाथ में शक्ति धारण किए हुए एक युवक के रूप में वर्णित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[12] में उनके छः मुख, चार हाथ तथा लाल वस्त्र धारण किये, मयूर पर आसीन हो। उनके दावें हाथों में कुक्कुट और घण्टा तथा बायें में विजय ध्वज और शक्ति होती है। समरांगणसूत्रधार[13] में कार्तिकेय को सूर्य के समान तेजस्वी, रक्तवर्ण का वस्त्र धारण किये, अग्नि की प्रभा के समान कान्तिमान, षष्टमुखी अथवा एक मुखी मुकुट, मणि, हार, इत्यादि से अलंकृत प्रशन्न मुद्रा में यौवन सम्पन्न कुमार के रूप में वर्णित किया गया है।

कला में कार्तिकेय की प्राधीनता कुषाण काल में प्राप्त होती है, जहां उन्हें द्विभुजी प्रदर्शित किया गया है। उनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में तथा बायें में शक्ति लिए हुए हैं। देवता वाहन के रूप में कभी कुक्कुट तो कभी मयूर का अंकन है। गुप्त काल तक आते–आते कार्तिकेय का मयूर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है। गुप्तोत्तर काल के मंदिरों में शिव–पार्वती के साथ विशेष रूप से कार्तिकेय का भी अंकन हुआ है। पूर्व मध्यकाल तक कार्तिकेय एक प्रमुख देवता के रूप में प्रतिष्ठापित हो जाते हैं।

कार्तिकेय मूर्ति विभिन्न प्रकार से निर्मित की गयी हैं। कार्तिकेय की स्थानक एवं आसन दोनों प्रकार की प्रतिमायें प्राप्त होती हैं। कुछ में उन्हें षष्ठानन तथा कुछ में उन्हें केवल एकमुखी बनाया गया है। उनकी कुछ मूर्तियों में दो भुजायें मिलती है, जबकि कुछ में चार से बारह भुजायें तक प्राप्त होती हैं। आसन मूर्ति के सम्बन्ध में कहा गया है कि आसन मूर्ति में दो हाथ होने चाहिए। स्थानक मूर्ति में चार हाथ तथा मयूर पर बैठी मूर्ति को षष्ठभूजी, अष्टभुजी एवं द्वादश भुजी होना चाहिए।[14] उनके हाथों में शक्ति, धनुष, बाण, तलवार, मुगदर, हथौड़ा, विजय ध्वज, घण्टा, खेटक मुर्गा, कमण्डल, पक्षी तथा शेष संवर्धन मुद्रा में दिख पड़ते हैं।

बांद–चित्रकट जनपद में स्थित कालंजर, चर, ऋषियन, रतौला, रामनगर आदि स्थानों से कार्तिकेय की प्रतिमायें प्राप्त होती हैं। प्राप्त कार्तिकेय प्रतिमाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है–

(1) आसन (2) स्थानक।

आसन मुद्रा में कार्तिकेय की प्रतिमा कालंजर, चर, ऋषियन से प्राप्त होती हैं। सभी प्रतिमायें चतुर्भुजी एवं षष्ठानन हैं। कालंजर से प्राप्त ललितासन मुद्रा में बैठी प्रतिमा के हाथ खण्डित होने के कारण उनके आयुध के विषय में स्पष्ट नहीं है। यद्यपि उन्हें 'कुमार' रूप में प्रदर्शित किया गया है।

कार्तिकेय आसन, चर

चर से प्राप्त प्रतिमा मंदिर के ताख पर निर्मित है। ललितासन मुद्रा में कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर आसीन है। प्रतिमा षष्ठमुखी एवं चतुर्भुजी है। बायें हाथ में शक्ति एवं फल है, दायें हाथ में खेटक तथा वरद मुद्रा में कमण्डल पर रखा है। सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार एवं माला, हाथों में भुजबन्ध, कमर में करधनी तथा पैरों में कड़ा आदि आभूषणों से अलंकृत है। कार्तिकेय अपने दाहिने पैर को मोड़े हुए तथा बायें पैर को मयूर पर टिकायें हुए हैं। कलात्मक रूप से सम्पूर्ण प्रतिमा सुन्दर है। प्रतिमा कार्तिकेय के कुमार रूप में प्रदर्शित हैं।

षष्ठमुखी, दो भुजी, लीलासन मुद्रा में एक अन्य प्रतिमा ऋषियन से प्राप्त हुयी है। उनके सिर पर मुकुट एवं विभिन्न आभूषणों से अलंकृत हैं। बायें हाथ में शक्ति एवं दायें में फल हैं। यह मूर्ति शास्त्रीय विधान के अनुसार निर्मित है।

कार्तिकेय, स्थानक, चर

स्थानक कार्तिकेय की प्रतिमा चर एवं कालंजर से प्राप्त हुयी है। चर से प्राप्त स्थानक प्रतिमा में कार्तिकेय के दो हाथ प्रदर्शित है। अपने बायें हाथ में खेटक व दायें में फल लिए मयूर को खिला रहे हैं। सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार, कटिसूत्र एवं लाल वस्त्र धारण किए तथा हाथों, पैरों में विभिन्न आभूषण से अलंकृत हैं। कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर टिके हैं। स्थानक मुद्रा में कालंजर से एक प्रतिमा दो भुजी एक मुखी प्राप्त हुयी है, जो चर प्रतिमा लक्षण के समान है। निर्माण काल की दृष्टि से सभी प्रतिमायेतं गुप्तोत्तर कालीन प्रतीत होती है।

कार्तिकेय–कौमारी देव शक्ति प्रतिमा, ऋषियन

ऋषियन से कार्तिकेय–कौमारी देव शक्ति की संयुक्त प्रतिमा प्राप्त हुयी है। जिसमें कार्तिकेय के बायीं जंघा में उनकी देव शक्ति बैठी है। कार्तिकेय को एकमुख वाला तथा मयूर के ऊपर आसीन दिखाया गया है। वे ललितासन मुद्रा में बैठे हैं। प्रतिमा विभिन्न आभूषणों से अलंकृत है। कार्तिकेय अपने दायें हाथ से मयूर के गर्दन को पकड़े हैं, दूसरा वरद म्रदु में है, बायें एक हाथ में कमण्डल व दूसरे हाथ से देवी का आलिंगन कर रहे हैं। देवी का एक हाथ कार्तिकेय के कन्धे पर, दूसरा हाथ हथेली से खण्डित है। देवी प्रसन्न मुद्रा में है। प्रतिमा लक्षण की दृष्टि से यह मूर्ति शास्त्रीय मूर्तियों से आयुधों में भिन्न है।[15] फिर भी कलात्मक दृष्टि से प्रतिमा सुन्दर है और मेरे शोध क्षेत्र से यह एक मात्र प्रतिमा प्राप्त हुयी है। प्रतिमा लक्ष्मी नारायण, उमा–माहेश्वर के सदृश है।

उपसंहार

इस प्रकार चित्रकूट परिक्षेत्र से प्राप्त कार्तिकेय की प्रतिमाओं का भारतीय मूर्तिकला के संदर्भ में विशेष महत्व है जो इस क्षेत्र की कलात्मक अभिरूचि को प्रदर्शित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. राव गोपीनाथ, एलीमेंट्स ऑव हिन्दू आइकोनोग्राफी जिल्द 2, भाग–2, द्वितीय संस्करण, वाराणसी, 1971, पृ0–415–420
2. अग्रवाल वासुदेवशरण, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन नगवा, वाराणसी, 1966 प्रथम संस्करण, पृ0–57
3. महाभाष्य, 5, 3, 99
4. विलकिंस, डब्ल्यू0जे0, हिन्दू माइथोलॉजी, दिल्ली, 1972, पृ0'276–82
5. शिवपुराण, 5, 35, 20
6. जोशी एन0पी0, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, बिहार राष्ट्रभाषा प्रकाशन, पटना, 2000, पृ0 150
7. बनर्जी, जे0एन0 डेवलपमेण्ट ऑव हिन्दू आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, 1956, पृ0 461
8. गुप्त परमेश्वरी लाल, गुप्त साम्राज्य, वाराणसी, 1970, पृ0 500
9. जॉन फेथफुल फ्लीट, कार्पस इन्स्कृप्शनम्, इण्डियकेरम जिल्द 3, कलकत्ता, 1888, पृ0 42

10. जोशी एन0पी0, वही, पृ0 105

11. वृहत्संहिता, 57, 41

12. विष्णुधर्मोत्तर, पुराणस, 3, 7, 3–6

13. समरांगणसूत्रधार, 77, 23–25

14. राव, गोपीनाथ, वहीं, जिल्द 2, भाग–2, पृ0 422

15. राव, गोपीनाथ, वहीं, जिल्द 2, भाग–2, पृ0 425